2 सितम्बर 2018 को भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम. वेंकैया नायडु की पुस्तक ''Moving on, Moving Forward – A Year in Office" के विमोचन के अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण।

———

1. सर्वप्रथम, मैं माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु जी को राज्य सभा के सभापति एवं भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में उनके एक वर्ष का सफल कार्यकाल पूर्ण होने पर बधाई देती हूं। मुझे खुशी है कि उन्होंने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर अपने एक वर्ष के कार्यकाल के बारे में रोचक वृत्तांत लिखा है। वह वृत्तांत एक कॉफी टेबल बुक ''Moving on, Moving Forward – A Year in Office" के रूप में हमारे समक्ष है। पुस्तक विमोचन के कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करती हूं।

2. इस अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी एवं श्री एच.डी. देवेगौड़ा जी, वित्त मंत्री श्री अरूण जेटली जी तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण उपस्थित हैं, सभी सम्मानित सज्जनों का हार्दिक अभिनंदन हैं।

3. माननीय उपराष्ट्रपति महोदय के कर्मठ व्यक्तित्व से हम सभी परिचित हैं। जैसा कि प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी माननीय बाल गंगाधर तिलक जी ने गीता रहस्य में लिखा हैः–

''कर्त्तव्यम् आचारं कामम् अकर्त्तव्यम् अनाचरम्।
तिष्ठति प्राकृताचारो य सः आर्य इति।।''

(A person who does the things which are to be done, who doesn't do the things which are not to be done, a person who stands by traditions is called Arya.) यह श्लोक वेंकैया जी के व्यक्तित्व को भलीभांति प्रतिबिम्बित करता है।

वेंकैया जी ने अपने राजनीतिक जीवन के आरंभ में कहा था – "I do not believe in Anuchar Siddhant, I believe in Sahchar Siddhant (No one in the party is a follower, all are collegues)। उन्होंने उसका सही अर्थों मे पालन किया और यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता है। छात्र जीवन से ही वे संघर्षपथ पर निरंतर चलते रहे। इमरजेंसी के दौरान कारावास में भी रहे लेकिन अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे। उन्होंने जिस गरिमा के साथ विभिन्न महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी निभायी है, वह सबके लिए अनुकरणीय है।

4. माननीय वेंकैया नायडू जी को देश के इतिहास में एक रोचक मोड़ पर इस महत्वपूर्ण पद को संभालने का अवसर मिला है जो अदम्य चुनौतियों और असीमित अवसरों का कालखंड है। यह वह समय है जब देश नए भारत के निर्माण के लिए तैयार है।

5. यह सच है कि पुस्तकें निश्चय ही हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती हैं। वह भी यदि किसी संघर्षपुरुष, साहित्यिक, विचारक, समाज सुधारक एवं कुशल संगठनकर्ता के बारे में हो, तो वह निश्चय ही पाठकों के लिए प्रेरणा और सकारात्मक भावनाओं के प्रचार–प्रसार का माध्यम बन जाती हैं। उच्च कोटि की पुस्तकें बीते समय की चुनौतियों से निपटने एवं भविष्य के सपनों को बुनने के साथ–साथ वर्तमान में कैसे जीवन जिया जाए, इसका मार्ग प्रशस्त कर देती हैं।

6. वेंकैया नायडू जी की पहचान हमेशा एक 'आंदोलनकारी' के रूप में रही है। वे 1972 में 'जय आंध्र आंदोलन' के दौरान पहली बार सुर्खियों में आए। छात्र जीवन में उन्होंने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की विचारधारा से प्रभावित होकर इमरजेंसी के खिलाफ संघर्ष में हिस्सा लिया एवं युवाओं को अन्याय के विरूद्ध एकजुट किया।

7. आपातकाल के बाद वे 1977 से 1980 तक जनता पार्टी के युवा शाखा के अध्यक्ष रहे। वर्ष 2002 से 2004 तक उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का उतरदायित्व निभाया। वे अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रहे और वर्तमान सरकार में भारत सरकार के अंतर्गत शहरी विकास, आवास तथा शहरी गरीबी उन्मूलन, सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य मंत्री के रूप में कार्य किया।

8. माननीय वेंकैया जी समय की डगर पर निडर चलने वाले साहसी पथिक हैं। नीतिगत रूप से वे बेहद मुखर, प्रखर वक्ता, स्पष्टवादी एवं विशुद्ध चिंतक हैं। उनकी लेखनी में विचारों की स्पष्टता एवं सिद्धांतों के प्रति निष्ठा दिखती है। भारत को विश्व का श्रेष्ठ देश बनाने की ललक उनके कार्यों एवं विचारों में दिखती है। उत्कृष्ट संवाद एवं भाषण शैली के लिए वह जाने जाते हैं। उनके भाषणों में शब्दों की विशिष्ट संयोजन शैली होती है जो बहुत प्रभावी एवं प्रेरक एवं रोचक लगती है। उदाहरणार्थ एक वाक्य देखिए – " If you will cooperate, I will operate better". रोचक भाषण शैली के लिए उन्होंने जगन्नाथ राव जोशी जी एवं अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषणों से प्रेरणा ली।

9. मातृभाषा एवं हिन्दी के प्रति उनका आग्रह एवं सम्मान अत्यन्त प्रेरणादायी है। राज्य सभा के सभापति के रूप में अपने सदस्यों को वे अपनी मातृभाषा में बोलने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते रहते हैं और उन्होंने मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में भाषांतरण (Interpretation) की सुविधा उपलब्ध कराई है। साथ

ही, जिन 5 भाषाओं में Interpreters राज्य सभा एवं लोक सभा में उपलब्ध नहीं थे, की संयुक्त रूप से व्यवस्था कराई है और उनकी सेवाएं दोनों सदन ले रहे हैं। उन्होंने जब इस आशय की घोषणा राज्य सभा में की थी तो उस घोषणा में उन्होंने 10 भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया था जिससे पूरा सदन आह्लादित हो गया था।

10. वे स्वभावतः प्रयोगधर्मी एवं प्रगतिशील विचार के है। साथ ही, भारत की गौरवशाली लोकतांत्रिक परंपराओं के पालन में अटूट आस्था भी है।

11. मुझे उनके साथ काम करने का लंबा अनुभव है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है और वह एक लेखक, खिलाड़ी, सामाजिक कार्यकर्ता के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से भी जुड़े रहे हैं।

12. श्री वेंकैया नायडु जी सदैव गांव, गरीब एवं किसान के हितैषी रहे हैं। वे जमीन से जुड़े राजनीतिज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। वेंकैया जी के व्यक्तित्व में सामाजिक–साहित्यिक–व्यावहारिक सोच, अद्वितीय राजनीतिक समझ, विद्वता, सकारात्मकता एवं प्रशासनिक दक्षता (administrative acumen) का अद्भुत संगम है। वे progressive हैं एवं सदैव innovative idea को समुचित सम्मान देते हैं। कृषि को sustainable and profitable बनाने को लेकर उनकी स्पष्ट सोच है।

13. उन्होंने लगभग हर मंच पर हमेशा निर्भीक होकर जनता की आवाज़ उठाई है एवं संसद में चाहे पक्ष में हो एवं प्रतिपक्ष में, सदैव जनहित की बात की है, न्याय की बात की है एवं उनके लिए आवाज उठायी है जो वंचित हैं, शोषित हैं।

14. वे संसद की सभाओं में शालीनता, मर्यादा, शिष्टाचार एवं सदाचरण के पक्षधर रहे हैं। जब वे संसदीय कार्य मंत्री थे, तब लोक सभा अध्यक्ष के रूप में मैंने उनकी कार्यशैली को बहुत ही निकटता से देखा है। वे पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों में बेहतर संतुलन स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं।

15. **वर्तमान में वे राज्य सभा के पीठासीन अधिकारी के रूप में अत्यन्त महत्वपूर्ण पद की जिम्मेदारियों का निर्वहन एवं सभा का संचालन उसी निष्पक्षता, दक्षता, उत्कृष्टता एवं सहजता से कर रहे हैं जिसके लिए वे जाने जाते हैं।** उनका यह मानना है कि सदन में Debate, Dissent और Discussion के लिए सबसे उचित मंच है, लेकिन वे Disruption को Parliamentary Democracy के हित में नहीं मानते हैं।

16. Parliamentary Democracy पर उनके विचार बहुत स्पष्ट है– "Let the government propose, the opposition oppose and the House dispose. Democracy will flourish if the government is responsive and the opposition responsible."

17. हमारी गौरवशाली संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उनका सम्मान एवं गर्व उनकी जीवन एवं कार्यशैली में स्पष्ट नज़र आता है। हमारे वैदिक मूल्य, योग एवं आध्यात्मिक अंतरदृष्टि संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणादायी हैं एवं हमें विभिन्न प्रकार की चुनौतियों, संघर्षों एवं तनाव से मुक्ति प्रदान करते हैं।

18. वे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक व राजनीतिक समता के लिए कार्य करने वाले जीवन्त व्यक्तित्व हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय के स्वप्न को साकार करना उनका राजनैतिक लक्ष्य रहा है। Good Governance ही transformation का माध्यम है। गांव, गरीब और किसानों का भाग्य तभी बदला जा सकता है, जब सुशासन होगा एवं सत्ता के विभिन्न भागीदार एक टीम के रूप में कार्य करेंगे।

19. इस पुस्तक के आखिरी पन्ने पर उनके फोटो के साथ लिखा है– Stepping out, looking forward to another purposeful day, जो निश्चय ही उनके संघर्षशील एवं आशावादी व्यक्तित्व से मेल खाता है। अभी भी उनमें वह जोश, समर्पण, आत्मानुशासन एवं उत्सुकता दिखती है एवं वे नवीन

विचारों से ओत–प्रोत प्रेरणादायी व्यक्तित्व के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं। राजनीतिक फलक पर उनकी उपस्थिति हम सभी को सदैव inspire करती रहेगी।

20. इस पुस्तक में माननीय वेंकैया जी के बारे में बाल्य–काल से लेकर वर्तमान समय तक की विभिन्न घटनाओं का वर्णन हैं। गांव के एक साधारण युवक से लेकर भारत के उपराष्ट्रपति पद तक का उनका सफर उनके आत्मविश्वास, दृढ़संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का जीता जागता उदाहरण है। इस पुस्तक के विमोचन के अवसर पर उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और मुझे आशा है कि पाठकों को उनके एवं उनके विचारों के बारे में जानने–समझने एवं प्रेरित होने का अवसर मिलेगा। निश्चित रूप से यह एक स्मरणीय किताब होगी।

21. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु जी को एक बार पुनः धन्यवाद देती हूं और ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूं कि सार्वजनिक जीवन में वे सदैव आगे बढ़ते रहें और राजनीति के उच्चतम शिखर को प्राप्त करें। भारतीय राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहें।

धन्यवाद।

———————